This PDF you are browsing is in a series of several scanned documents containing the collation of all research material of Prof. Kul Bhushan Mohtra ji.Mohtra ji is currently the State Incharge Library and Documentation Department, J&K BJP Headquarters, Nanaji Deshmukh Library..This material was gathered while he was working on his multiple books on J&K History.All this rare material is now offered to the Community freely.

CV:

Kul Bhushan Mohtra was born on 9th Sep, 1957 in a

village Amuwala in Kathua district.

Matric from BOSE, Jammu and Adeeb from AMU. Has been awarded Honorary Professor by School of Liberal Art & Languages, Shobhit University, Gangoh, Distt. Saharanpur, U.P.

Director General, Raja Ram Mohan Roy Library Foundation nominated him as his nominee in the Committee for purchasing of Books for UT Jammu & Kashmir. Incharge of Nanaji Deshmukh Library & Documentation Department at BJP state HQ in J&K.

Actively engaged in political, social, charitable and religious activities. Always striving to serve the poor and downtrodden of the society.

Main works-

A saga of Sacrifices: Praja Parishad Movement in J&K

100 Documents: A reference book J&K, Mission Accomplished

A Compendium of Icons
of Jammu & Kashmir &
our Inspiration (English)

Jammu Kashmir ki
Sangarsh Gatha (Hindi)

Scanning and upload by
eGangotri Foundation.

Daink Jaysan 20 Aug-2008

बढ़े चलो...अमरनाथ मुद्दे पर जेल भरो आंदोलन के दूसरे दिन मंगलवार को जम्मू में महिलाओं का उत्साह देखने लायक था। गिरफ्तारी देने के लिए बड़ी तादाद में महिलाएं घरों से तिरंगा लेकर निकलीं। *(संबंधित खबरें पेज 9 पर)* प्रेट्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

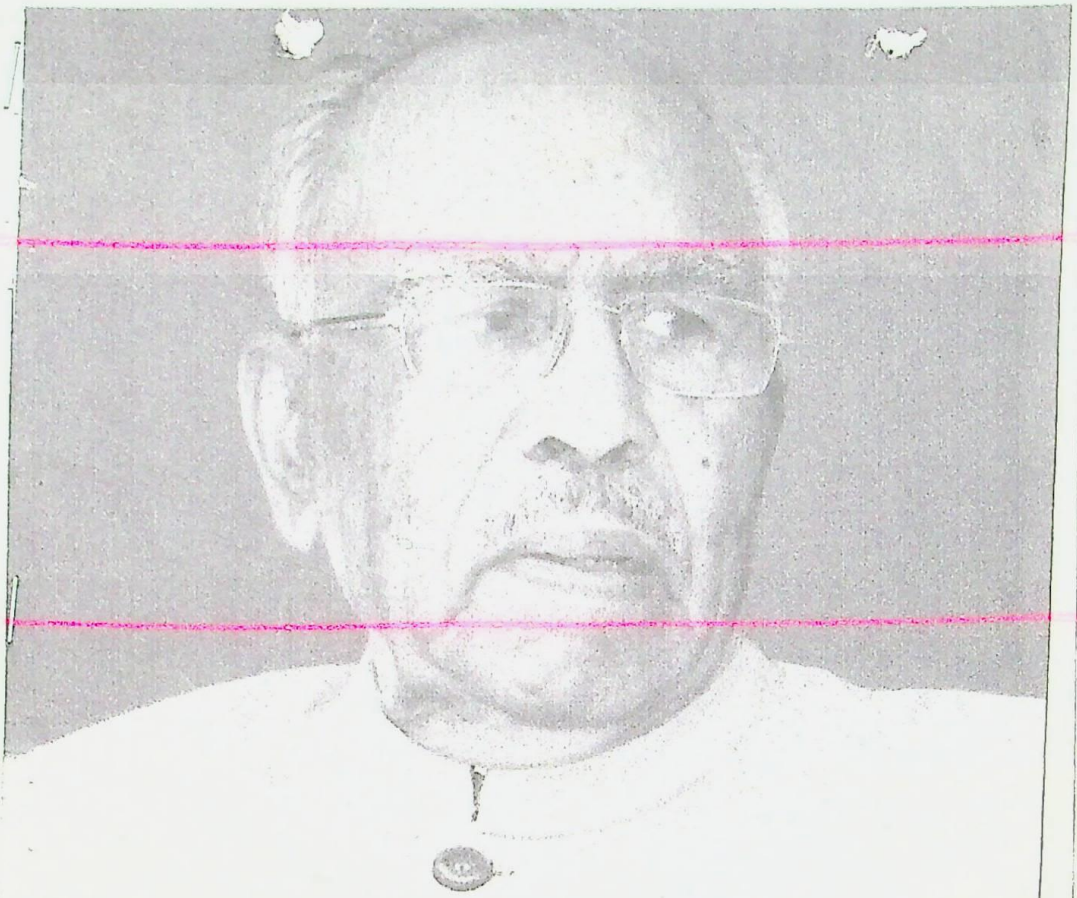

केदारनाथ साहनी स्मृति ग्रंथ

अपने साहनी जी

(खण्ड - एक)

डॉ. मुक्र्जी स्मृति न्यास, नई दिल्ली

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

कोटली को बचाने का हर जोखिम उठाया

– युवराज गुप्ता

मैं माननीय केदारनाथ साहनी जी से साल 1943 में पहली बार तब मिला जब मेरी उम्र महज दस साल की थी। उन जैसे व्यक्तित्व से मिल पाने के कारण मैं खुद को बहुत भाग्यशाली भी मानता हूं। यह अवसर मुझे तब मिला जब वे मेरे पैतृक घर कोटली (जो अब पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर का हिस्सा है) आए थे। कोटली उस समय मीरपुर जिले का एक शहर था। कोटली खुद एक तहसील का मुख्यालय था। धर्मवीर जी, डॉ. दुर्गा दत्त जी और जगदीश अग्रवाल जी ने जिस दिन अन्य लोगों के साथ दौरा किया था वह दिन कोटली के इतिहास में एक लैंडमार्क साबित हुआ क्योंकि उसी दिन पहली बार हमारी शाखा को भगवा ध्वज भेंट किया गया था। मैं उनसे काफी प्रभावित हुआ था। इसका कारण महज उनका बड़ा व्यक्तित्व मात्र नहीं था बल्कि उस दिन उन्होंने अपना जो बौद्धिक दिया उससे ज्यादा प्रभावित हुआ और सही अर्थों में अच्छा स्वयं सेवक बनने की प्रेरणा भी मिली। पंजाब प्रांत के तत्कालीन संघचालक श्री धर्मवीर ने 1941 में इस शाखा की शुरुआत की थी।

साहनी जी कुछ महीने पहले ही मीरपुर में जिला प्रचारक के रूप में आए थे और देशभक्ति के उत्साह से भरे हुए थे। उनके बारे में बहुत पहले ही यह अनुमान लगा लिया गया था कि यह धरती-पुत्र संघ को मजबूत कर इतिहास रचेगा और एक दिन देश की सेवा में अपना जीवन लगा देगा। संघ इतिहासकारों के लिए यह तथ्य सर्वविदित है कि उन्होंने पूरे देश की यात्रा की, जिसके बारे में यहां जिक्र करने की कोई जरूरत नहीं है।

अगली बार केदारजी जी से तब मिला जब वे देश (मातृभूमि) के विभाजन के तुरंत बाद कोटली आए थे। मार्गदर्शक के रूप में उन्होंने स्वयंसेवकों में राष्ट्रीयता का भाव जागृत किया। इसके साथ ही उन्होंने कोटली के लोगों की रक्षा की। वैसे भी वह क्षेत्र काफी संवेदनशील था। पाकिस्तान से संबंध रखने वाले मुस्लिम बहुल वाले ग्रामीण क्षेत्रों में धमकी मिलने की वजह से पहले ही हिंदुओं का पलायन शुरू हो गया था और बाकी वहां मौजूद हजारों हिंदुओं और सिखों का जीवन जोखिम में पड़ गया था। अगर समय रहते उन लोगों की

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

सहायता नहीं की जाती तो निश्चित रूप से उन सब की हत्या कर दी जाती। उस वक्त साहनी जी ने यह चुनौती स्वीकार की। उन्होंने आर्मी कमांडर से तुरंत उस क्षेत्र में फौज को भेजने का अनुरोध किया। आर्मी कमांडर ने उन्हें अपने बचे हुए जवानों को दिखाया। वहां जितने जवान मौजूद थे, उससे कोटली शहर को बचा पाना मुश्किल था। इस कठिन परिस्थिति में साहनी जी के ही कहने पर संघ के स्वयंसेवकों ने कोटली शहर की सुरक्षा का जिम्मा लिया। आर्मी कमांडर ने भी उनका साथ देने का भरोसा दिया। इस प्रकार संघ के कार्यकर्ताओं, पुलिस और आर्मी के जवानों को मिलाकर एक टीम गठित की गई। इस टीम का नेतृत्व आर्मी के हाथ में था। जब ये टीम कोटली के लिए रवाना हुई तो बीच रास्ते में ही मुस्लिम बहुल इलाकों में इस टीम पर हमला कर दिया गया। इस हमले में कई लोग हताहत हुए।

साहनी जी से अगली बार की मलाकात, जो कि मेरे लिए अंतिम थी, तब हुई जब वे मीरपुर से कोटली आए थे। उस समय की स्थिति कितनी विषम थी, वह मुझे आज भी याद है। सड़क परिवहन बिल्कुल ठप कर दिया गया था। परिस्थिति बहुत ही भयानक हो चुकी थी। उस समय उनका दौरा बिल्कुल ही सही नहीं कहा जा सकता था। लेकिन राष्ट्र-प्रेम के कारण उन्होंने अपना दौरा रोका नहीं बल्कि कठिन परिस्थिति का सामना करते हुए वे कोटली को बचाने के उद्देश्य से वहां पहुंच गए। बलिदानियों के उस शहर की रक्षा दो महीने तक की, तब तक कई लोगों की जिंदगियां कुर्बान हो गई।

इतना सब कुछ होने के बाद 27 नवंबर 1947 को भारतीय जवानों ने इस शहर को खाली करा लिया। बताया जाता है कि यह निर्णय पंडित नेहरू के समर्थन से शेख अब्दुल्ला द्वारा रची साजिश का नतीजा था। इतिहास जहां एक तरफ केदारजी की भूमिका के साथ-साथ कोटली के आम लोगों की बहादुरी और बलिदान को याद करेगा वहीं दूसरी तरफ उन निर्णायक दिनों में राज्य का अहम हिस्सा पाकिस्तान को उपहार में दे देने के लिए शेख अब्दुल्ला और पंडित नेहरू को कभी क्षमा नहीं करेगा।

(कोटली के स्वयंसेवक, जम्मू)

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri